



ISSN: 0971-7447 (Print)  
ISSN: 2455-6815 (Online)

## Call for articles in the next issue of ENVIS Newsletter

The United Nation's Food & Agriculture Organization has declared 2023 as the "*International Year of Millets*". It is well known that millets are drought and disease resistant crops and they are also store house of nutrients. Millets grow in marginal soil with least care and has been part of cultivation and cuisine in the Indian Himalayan region since times in memorial.

Climate scientists are optimistic that millets can be a climate smart option as future food and agricultural practices. Therefore millet production is likely to be increased across the globe including India. ENVIS Newsletter on Himalayan Ecology invites articles on millets for creating awareness on production, consumption, development of market, value chain and many other aspects of research and development activities on millets.

A two-page article (1200 words and less than 4-5 references) written in popular Hindi /English language with supporting photo/ chart/ data table is requested. The manuscripts submitted by the author(s) will be edited for length and clarity as per the standard norms of the ENVIS Newsletter.

**Articles should be submitted by 15 March, 2023**

**E-mail manuscript (.doc) to: [gbpihed@envis.nic.in](mailto:gbpihed@envis.nic.in)**

**Further details to prepare the article are available at: [http://gbpihedenvis.nic.in/Envis\\_Newsletter.html](http://gbpihedenvis.nic.in/Envis_Newsletter.html)**

Copyright © 2023 ENVIS Newsletter Himalayan Ecology. All rights reserved.

**Environment Information, Awareness Capacity building and Livelihood Programme (EIACP) formerly known as ENVIS Centre on Himalayan Ecology, G.B. Pant National Institute of Himalayan Environment, Kosi-Katarmal, Almora, Uttarakhand**





ISSN: 0971-7447 (Print)

ISSN: 2455-6815 (Online)

## इनविस पत्रिका के अगले अंक हेतु लेखों के आमंत्रण

संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य और कृषि संगठन ने मोटे अनाज के महत्व को प्रोत्साहन देने के लिए वर्ष 2023 को "अंतर्राष्ट्रीय मिलेट (मोटा अनाज) वर्ष" के रूप में घोषित किया है। यह अच्छी तरह से ज्ञात हैं कि मोटा अनाज पोषक तत्वों का भंडार जो कि स्वास्थ्य वर्धक है। ये फसलें कम भू-क्षेत्र में आसानी से उगायी जा सकती है। प्राचीन काल से ही ये फसलें भारतीय हिमालयी क्षेत्रों की परम्पराओं का हिस्सा रहा है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि मोटा अनाज भविष्य में भोजन के रूप में जलवायु परिवर्तन के दौर एवं वर्तमान कृषि पद्धतियों के अनुकूल एक बेहतर विकल्प हो सकता है, इसलिए भारत सहित दुनिया भर के देशों में मोटे अनाज का उत्पादन बढ़ने पर जोर दिया जा रहा है। हिमालयी क्षेत्रों में मोटे अनाज के उत्पादन, खपत, बाजार के विकास, मूल्य श्रृंखला और कई अन्य पर जागरूकता बाजरा पर अनुसंधान और विकास गतिविधियों के पहलू पर लेख के लिए आमंत्रित करता है। अतः आपसे निवेदन है कि अपना विस्तृत लेख लोकप्रिय हिंदी/अंग्रेजी भाषा में निर्धारित (1200 शब्द और 4-5 संदर्भ से कम) का लेख जिसमें फोटो/चार्ट/डेटा तालिका के साथ हमें दिये गये ई-मेल पर भेजने का कष्ट करें। इन लेखों को इनविस पत्रिका के मानदंडों के अनुसार आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

ys[k tek djus dh vfre frffk% 15 ekpl 2023

b&esy% [gbpihed@envis.nic.in](mailto:gbpihed@envis.nic.in)

vf/kd tkudkjh grq [http://gbpihedenvis.nic.in/Envis\\_newsletter](http://gbpihedenvis.nic.in/Envis_newsletter)



पर्यावरण सूचना, जागरूकता, क्षमता निर्माण और आजीविका कार्यक्रम (ईआईईसीपी), जी.बी. पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, कोसी कटारमल, अल्मोड़ा, उत्तराखंड